

**POST GRADUATE CERTIFICATE IN  
BANGLA-HINDI TRANSLATION  
PROGRAMME (PGCBHT)**

सत्रांत परीक्षा

00325

जून, 2016

**एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और  
पुनःसृजन**

**समय : 3 घण्टे**

**अधिकतम अंक : 100**

**नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए :  $2 \times 10 = 20$ 
  - (a) बांग्ला एवं हिन्दी के भाषिक अन्तःसम्बंधों पर प्रकाश डालिए।
  - (b) बांग्ला एवं हिन्दी की शब्दरचना प्रक्रिया का सोदाहरण तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
  - (c) बांग्ला-हिन्दी अनुवाद की मुख्य समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
2. निम्नलिखित बांग्ला पदों/शब्दों के हिन्दी पर्याय बताइए : 5
  - आइन, मूर्खपात्र, आचार्य, बड़, घोमटा, घूम, पेंपे, जातीय, कथन, छाल।
3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों/पदों के बांग्ला पर्याय लिखिए : 5
  - सीखना, अमीर, जब-तब, इधर, सामान, किताब, रूपया, खाना, चाय, सम्पर्क।

MTT-002

1

P.T.O.

4. निम्नलिखित कहावतों-मुहावरों में से किन्हीं पाँच का हिन्दी अनुवाद करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए :

- (a) अरण्ये रोदन
- (b) आकाश आर पाताल
- (c) गा ज्ञालानो
- (d) चोथ राङानो
- (e) छोट मूथे बड़ कथा
- (f) डुमुरेर फुल
- (g) सात खून माफ
- (h) थिचुड़ी पाकानो
- (i) तिल थेके ताल
- (j) चोरेर माघेर बड़ गला

5. निम्नलिखित अंशों में से किन्हीं तीन का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

$3 \times 15 = 45$

- (a) उ निश्शो एकाशि सालेर बसन्तकाल । डियेना विश्वविद्यालयेर विज्ञानी राइनहोल्ड बाट्टलमान एकदिन ताँर ल्याबरेटोरिते काजे मग्न । हठां से घरे चुकलेन, ताँर सहकमी ग्येरार्ड एथार रीतिमतो हस्तदन्त हये । ताँर हाते एकथानि प्रिप्रिस्ट । माने जार्नाले छापा हते याच्छ एमन एकटि प्रबन्ध । अमन जिनिष गवेषकमहले हात घोरे विस्तर । कोनो विज्ञानी लिखलेन एकटि पेपार । ता छापार पक्षति एरकम प्रथमे तिनि सेटि पाठावेन निर्दिष्ट जार्नालेर ठिकानाय । तो सेइ जार्नालेर एडिटरमशाइ सेटि याचाइयेर जन्य पाठावेन ताँर तालिकाडू त्रै विशेषज्ञदेर काछे । ताँरा खुँटिये परथ करवेन पेपारटि । देखवेन, कोआओ भुलचुक आছे किना । अथवा एमन कोनो दावि, या ताँरा मानेन ना ।

আপত্তিকর মনে হলে বিশেষজ্ঞেরা রায় দেবেন যে, পেপারটি ছাপার অযোগ্য। জার্নালের এডিটর পেপার ফেরত পাঠাবেন বিজ্ঞানীর ঠিকানায়। জানিয়ে দেবেন যে সেটি ছাপা হবেনা। আর দ্বিতীয় সম্ভাবনা এই যে, পেপার পড়ে বিশেষজ্ঞেরা বলবেন, তা ছাপার যোগ্য হলেও কিছু-কিছু জায়গায় সংশোধন বা পরিমার্জন দরকার। সেক্ষেত্রে জার্নালের এডিটর জানাবেন ওই মতামত বিজ্ঞানীকে।

- (b) ‘সেদিন ফ্লোরেন্স থেকে ট্রেন ছুটছে তুঃরিনের দিকে  
উনিশশো ছাবিশ সাল, আঠারোই জুন।  
মধ্যপথে একবার মিলান স্টেশনে কোনো

ডিউক এসে নিচু স্বরে বললেন কবিকে,  
‘চোখে যা দেখেছেন সেটা সবখানি নয়। শুধু বলি  
রাজনীতি নিয়ে কিছু না বলাই ভাল।  
এখানে কথার কোনও স্বাধীনতা নেই। তা

ছাড়া চারদিকে শুমখুন—’

আচম্ভিতে ছাড়ে ট্রেন। কবির কপালে পড়ে ভাঁজ।  
তবে কি কোথাও হল সত্যি কোনো ভুল?

মনে হয়েছিল খুবই যোগ্য নেতা, তৎপর,

দেশব্রতে পরম আকুল,

মনে হয়েছিল যেন শিল্পীর দু’চোখে দেখা

শিল্পীও সে

সবই ঠিক। তবে কেন অত ভোরে লুকিয়ে

আসেন ঘরে বেনেদেত্তো ক্রোচে?

তবে কেন অনেকেরই চোখেমুখে চাপা এত ভয়?

- (c) সময় চলে যায় কিন্তু কিছু-কিছু শব্দের মহিমা বদলায়  
না কিছুতেই। কাশী শব্দটি তেমনই একইভাবে  
মোক্ষসোভের আর এক নাম হয়ে রয়ে গিয়েছে কয়েক  
হাজার বছরে। পৌরাণিক একটি মতে অনুমান

শ্রিস্টের জন্মের প্রায় বারোশো বছর আগে মহারাজ সুহেত্তের পুত্র কাশ্য এই নগরীর পতন করেছিলেন। যাঁর নামানুসারেই এর নাম কাশী। আজ এই একুশ শতকে এসে আসমুদ্র হিমাচলে যতই কলিকাল চরমে উঠুক, ধর্মপ্রাণ ভারতবর্ষের এই আধ্যাত্মিক রাজধানীতে কলির প্রবেশ নিষেধ। কারণ, এখানে দেবী গঙ্গা স্বযং তাঁর পবিত্র জলধারা দিয়ে ধূয়ে দেওয়ার দায়িত্ব নিয়েছেন সমকালের সমস্ত কলৃষ। কিংবদন্তি বলে, পৃথিবী নাকী শুরু হয়েছিল এই শহর থেকেই আর তার শেষও হবে এখানেই।

এত সব মাথায় নিয়ে গঙ্গার বুকে ডেসে চলেছে যে যুবক, তার শরীরে নগরীর দিক থেকে থেয়ে আসা হাওয়া লেপ্টে গেলে একটা রোমাঞ্চ তো আসবেই। রোমাঞ্চ আরও কিছুটা বেশিই কারণ, আজ নৌকায় তার পাশে রয়েছে সেই প্রাণোচ্ছল যুবতী, যে ধীরে ধীরে সেঁধিয়ে যেতে শুরু করেছে তার স্পন্দন। আজ তার সঙ্গে রয়েছে শুধুই সে।

- (d) বয়স তখন বছর চারেক। আগুনে পুড়ে মৃত্যু হয় মায়ের। দাদামশাইয়ের অভিযোগের ডিঙ্গিতে বাবা গ্রেপ্তার। তিন মাস পর ছাড়াও পান। কিন্তু আদালতের নির্দেশে দাদামশাই বৈদ্যনাথ মিত্রের কাছেই স্থায়ীভাবে থেকে যায় অপূর্ব। দক্ষপুরুর মহেশ বিদ্যাপীঠ থেকে 536 নম্বর পাওয়া অপূর্ব সেন। অশীতিপর দাদামশাইয়ের পাওয়া বাড়িভাড়ার টাকা আর তার বাবার থেকে হাজার খানেক টাকার মাসোহারা সহল করেই জীবনের প্রথম ধাপটা সাফল্যের সঙ্গে উতরে গেল সে। একচিলতে ঘরে আলো জ্বলে দিয়েছে মাথ্যমিকে অপূর্ব ফল। ঠাকুর্দার কাছে থাকেন দিদি

প্রিয়া। ফোনে জানলেন, দাদুই সব, আমরা তো ওর  
জন্য কিছুই করতে পরিনি।’ আর অপূর্ব? ‘আমার  
মা সঙ্গে আছে, আমি হারব না।’

বছর চারেক বয়সের স্মৃতি আজও টাটকা।  
বাবা কালিপদ সেনের সোনার দোকান ছিল দত্তপুরুরের  
বটতলায়। কাছেই নিজস্ব পাকা বাড়ি। মা গৌরী  
আর দিদির স্নেহে বড় হচ্ছিল সে। 2003 সালের 23  
জানুয়ারি সক্ষ্যায় মায়ের অস্থাভাবিক মৃত্যু হয়।

- (e) নজরুল ইসলাম আমাদের প্রথম জনগনের কবি। এবং  
আমার ধারণা সব দিক বিচার করলে তিনিই জনগনের  
শেষ কবি। এ কথার একটা সমর্থন জীবনানন্দের  
রচনাতেও পাওয়া যাবে। একটা জাতি জনগনের  
কবি চায় এক জন। তিনি সেই কবি। সমস্ত দিক থেকে  
সমন্বয় করেছিলেন, এমনকী তাঁর বিদ্রোহী কবিতা,  
সেটা কিন্তু জীবন সমন্বয়ের সঙ্গে ভাষা সমন্বয়ও  
ঘটিয়েছে। জনগণকে দূরে রেখে কোনও কথা  
বলতে চাননি। জনগণের হয়ে বলেছেন। সেটাই  
ওঁর বিদ্রোহ। নজরুলই প্রথম বাঙালি যিনি পূর্ণ  
স্বাধীনতা চেয়েছিলেন। তাঁর ‘ধূমকেতু’ পত্রিকায়,  
যেটা সপ্তাহে দুদিন করে বেরত। জেলের মধ্যে থেকেও  
কবিতা সুর দিয়ে বেঁধেছেন, এটাই নজরুল। তাকে  
উদ্দৃতে বলে ‘মিজাজ’। ধরো, গজল। বাংলা  
গজল। এই যে উদ্দূ গজলের চরম উৎকর্ষকে তিনি  
বাংলায় নিয়ে এলেন সেই গজলটা আমি কেমন করে  
শুনব, সেটা ধরতে গেলে এই ‘মিজাজ’ টা দরকার।  
তেমনই তাঁর কবিতা। ‘বিদ্রোহী’ কবিতায় সব ধরণের  
মিথকে মেশাচ্ছেন তিনি, হিন্দু মিথ, খ্রিস্টান মিথ,  
ইসলাম মিথ। সমস্তকে একত্রিত করে সংমিশ্রণ।

## 6. निम्नलिखित में से किसी एक का बांगला में अनुवाद कीजिए :

$1 \times 10 = 10$

(a) हरिहर काका के यहाँ से मैं अभी-अभी लौटा हूँ। कल भी उनके यहाँ गया था, लेकिन न तो वह कल ही कुछ कह सके और न आज ही। दोनों दिन उनके पास मैं देर तक बैठा रहा, लेकिन उन्होंने कोई बातचीत नहीं की। जब उनकी तबीयत के बारे में पूछा तब उन्होंने सिर उठाकर एक बार मुझे देखा। फिर सिर झुकाया तो दुबारा मेरी ओर नहीं देखा। हालाँकि उनकी एक ही नजर बहुत कुछ कह गई। जिन यंत्रणाओं के बीच वे धिरे थे और जिस मनःस्थिति में जी रहे थे, उसमें आँखें ही बहुत कुछ कह देती हैं, मुँह खोलने की ज़रूरत नहीं पड़ती। हरिहर काका की जिन्दगी से मैं बहुत गहरे जुड़ा हूँ। अपने गाँव में जिन चंद लोगों का मैं सम्मान करता हूँ; उनमें हरिहर काका भी एक हैं।

(b) गमछा और तौलिया  
दोनों एक तार पर टैंगे  
सूख रहे थे साथ-साथ  
वे टैंगे थे  
जैसे दो संस्कृतियाँ  
जैसे दो हाथ - बायाँ और दायाँ  
झूलते हुए अगल-बगल  
तेज धूप में  
थोड़ी सी गरमा-गरमी के बाद  
मैंने सुना  
तौलिया गमछे से कह रहा था  
तू हिन्दी में सूख रहा है  
सूख,  
मैं अंग्रेजी में कुछ देर  
झपकी लेता हूँ।

---